# संगीत भूषण (प्रथम खंड)
# Sangeet Bhushan Part-I (First Year)
## तबला/परवावाज (Tabla/Pakhawaj)

पूर्णांक : १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

## शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान-
लय और उसके तीन प्रकार (विलम्बित,मध्य,द्रुत) मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, आर्वतन, ठेका, ठाह, दुगुन, कायदा, रेला।

(२) तबले की उत्पत्ति का साधारण ज्ञान तथा दाहिने और बायें अंगों का वर्णन।

(३) तबला और पखावज के दाहिने और बायें कौन-कौन से स्थान पर आघात करके कौन-कौन से बोल उत्पन्न होते है, उनका विवरण।

(४) इस वर्ष में निर्धारित ताल समूहों के ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।

(५) अपने वाद्य की उत्पत्ति एवं उसके अंगों का ज्ञान।

(६) भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति का ज्ञान।

(७) श्री गोपाल नायक का एवं अमीर खुसरो का जीवन परिचय ।

(८) पाठयक्रम में निर्धारित तालों में टुकड़े तिहाई परणों को ताल लिपिबद्ध करने का ज्ञान ।

Scanned by CamScanner

## क्रियात्मक (Practical)

(१) एक से सोलह मात्रा तक हाथ पर ताली की सहायता से लय में बोलने का अभ्यास।

(२) त्रिताल, झपताल, कहरवा, दादरा और चारताल के ठेकों को ठाह और दुगुन लय में बजाने का अभ्यास।

(३) त्रिताल में कायदा चार पल्टे, दो मुखड़े, तीन टुकड़े, तीन तिहाई और झपताल में तीन सरल टुकड़े, दो कायदे, दो मुखड़े एवं तीन तिहाई बजाने का अभ्यास।

(४) गत एवं गीत में सम समझाकर तबला वादन आरम्भ करने का अभ्यास।

(५) पखावज पर सूल, चारताल और तीवरा ताल में परन, तीन टुकड़े, एक रेला और तीन तिहाई बजाने का अभ्यास।

(६) दादरा, कहरवा तालों में पांच लग्गी बजाने का अभ्यास।

(७) तबले के विद्यार्थियों को पखावज की भी तालों का ज्ञान होना अनिर्वाय ।

(८) वर्तमान प्रतिष्ठित तबला एवं पखावज वादकों के विषय में जानकारी।

(९) अपने वादय पर पाठयक्रम की तालों को विभिन्न तयकरियों में बजाने की क्षमता ।

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

# संगीत भूषण (द्वितीय खंड)
# Sangeet Bhushan Part-II (Second Year)
## तबला/पखावाज (Tabla/Pakhawaj)

पूर्णांक : १५०  शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

## शास्त्र (Theory)

(१) तबला और पखावाज के दाहिने और बायें के किस-किस स्थान पर आघात करके कौन-कौन से संयुक्त बोल उत्पन्न होते हैं, उनका विवरण और विकास।

(२) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन-
बोल, कायदा, पलटा, तिहाई उनके प्रकार मोहरा, मुखड़ा, टुकड़ा, तिगुन और चौगुन, रेला, पेशकार, उठान एवं परन, संगीत, जाति, नाद, स्वर एवं सप्तक ।

(३) भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर जी की ताल पद्धति का ज्ञान ।

(४) प्रथम और द्वितीय वर्ष में निर्धारित ताल समूहों के ठेकों की ठाह, दुगुन एंव चौगुन लयकारी में लिखना।

(५) जीवनी- श्री अनोखेलाल मिश्र, श्री कन्ठेमहाराज, श्री विष्णु नारायण भातखंडे, अमीर खुसरो।

(६) तबला एवं पखावज का विकास क्रम।

(७) अपने वाद्य की परम्पराओं(घराना) के विकास एवं उसके महत्वपूर्ण वादकों के नामों का ज्ञान।

(८) संभागीय स्तर के प्रतिष्ठित तबला एवं पखावज वादकों के विषय में जानकारी।



Scanned by CamScanner

(९) मोहरा, टुकड़ा, तिहाई, परण आदिताललिपिबद्ध करने की क्षमता ।

(१०) तबला परवावज एव मृदंग कडित्पत्ति का इतिहास।

(११) निम्नलिखित विषयों पर निबंध : मानव जीवन में संगीत का महत्व, ताल व लय का संगीत में स्थान ।

## क्रियात्मक (Practical)

(१) एकताल, सूलफाक, दीपचन्दी, रूपक, तीवरा तथा तिलवाड़ा ताल के ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयकारी में बजाने का अभ्यास। हाथ पर ताली खाली दिखाकर उपर्युक्त तालों के ठेकों को ठाह, दुगुन एवं चौगुन में बोलने का अभ्यास।

(२) त्रिताल में कायदा, पेशकार, रेला, टुकड़ा और मुखड़ा बजाने का अभ्यास। झपताल और एकताल में तीन कायदे, दो पेशकार, दो टुकड़े और तीन तिहाई बजाने का अभ्यास। दादरा और कहरवा के ठेकों को उलट-पलट करके बजाने का अभ्यास।

(३) परवावज पर सूलफांक, चौताल, तीवरा तथा धमार ताल के ठेकों को ठाह, दुगुन और चौगुन लयकारियों में तथा उपर्युक्त तालों में गत, तोड़ा और परन बजाने का अभ्यास।

(४) गीत और वाद्य के साथ साधारण ठेका बजाने का अभ्यास।

(५) पाठ्यक्रम की तालों में लहरा बजाने का सामान्य ज्ञान।

(६) सामान्य ज्ञान हेतू - तीवरा, सूलताल, दीपचन्दी में ठेके का ज्ञान एवं उनका प्रयोग।

(७) परवावज हेतु-चारताल, सूलताल, तीवरा में पांच साधारण परन, पांच चक्करदार परन का ज्ञान।

(८) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बोले गये बोलों को तबले या परवावज पर बजाने की क्षमता टुकड़े, मुखड़े और परणो का हाथ पर ताली के साथ पढ़न्त की क्षमता ।

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

# संगीत भूषण पूर्ण
# Sangeet Bhushan Final (Third Year)
## तबला/परवावाज (Tabla/Pakhawaj)

पूर्णांक : १५० शास्त्र - ५०, क्रियात्मक - १००

## शास्त्र (Theory)

(१) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का अध्ययन: -
मोहरा, मुखड़ा, रेला, लग्गी, लडी, कुआड़,गत, बांट, चक्करदार परन, जाति (पांच प्रकार) ग्रह और उसके चार प्रकार, पेशकार, तबला के दस वर्ण, दमदार तिहाई तथा बेदमदार तिहाई।

(२) ताल और उसके दस प्राण।

(३) साधारण गायन एवं वादन शैली का ज्ञान - जैसे ध्रुपद, धमार, ठुमरी, ख्याल, मसीतखानी और रज़ाखानी गत।

(४) समान मात्रा के ताल समूहों का तुलनात्मक अध्ययन।

(५) तबला और पखावज के इतिहास का ज्ञान।

(६) तबला और पखावज को स्वर में मिलाने की विधि।

(७) तबला और पखावज वादक के गुण एवं दोष।

(८) भातखंडे तथा विष्णु दिगम्बर की ताल पद्धतियों का अध्ययन और इन दोनों पद्धतियों में कायदा, टुकड़ा, परन, पेशकार आदि लिखनें का अभ्यास।

(९) प्रथम से तृतीय वर्ष तक निर्धारित सब तालों के ठेकों की ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन और आड लयकारी लिखने का अभ्यास।

(१०) तबला वादकों के प्रमुख व्यक्तियों में उस्ताद अहमद जान थिरकवा, पं. अनोखेलाल, हिववुदीनखां, पं. सामता प्रसाद, पं. किशन महाराज, उस्ताद करामततुल्ला खां, हिरेन गांगुली के कलात्मक साधना का अध्ययन तथा उनका योगदान।

(११) संगीत विषयक निबन्ध।

(१२) कायदा, पेशकार, रेला की स्वतंत्र वादन में भूमिका।

(१३) लय एंव लयकारी में अंतर, विषम लयकारी के अन्तर्गत पौनगुन, आड़, तिगुन को लिपिबद्ध करना तथा इनकी प्रायोगिक प्रस्तुति।

(१४) तबला एंव पखावज की विभिन्न परम्पराओं (घराना) का ज्ञान तथा उनके

Scanned by CamScanner

संस्थापकों के विषय में जानकारी।

(१५) ताल वाद्य हेतू लहरा की आवश्यकता, महत्व तथा निर्धारित तालों में लहरों का ज्ञान।

(१६) तबला एव परवावज वादन के विभिन्न बाजों का ज्ञान ।

## क्रियात्मक (Practical)

(१) आड़ाचारताल, धमार, झूमरा, पंजाबी ठेका, जतताल, सवारी (15 मात्रा) गजझम्पा, मत और रूद्र ताल के ठेकों की ठाह, दुगन, तिगुन एवं चौगुन लयकारी में परणे, टुकड़े एवं लयवांट बजाने का अभ्यास।

(२) एकताल, चारताल,आड़ाचारताल एवं झूमरा ताल में पेशकार, कायदा, टुकड़ा, चक्करदार परन बजाने का अभ्यास। धमार तथा तीवरा ताल में पांच टुकड़े तथा तीन तिहाई बजाने का अभ्यास।

(३) तबला और परवावज को स्वर में मिलाने का अभ्यास।

(४) कण्ठ संगीत और यन्त्र संगीत के साथ संगत करने की क्षमता।

(५) दादरा और कहरवा ताल में कठिन लग्गी एवं लड़ी बजाने का अभ्यास एंव तिहाई बजाकर समाप्त करने का अभ्यास ।

(६) त्रिताल और झपताल में लहरा बजाना।

(७) धमार, तीवरा और सूलफांक ताल में गत, परन एवं चक्करदार परन बजाने का अभ्यास।

(८) रूपक, झपताल, एकताल, आड़ाचारताल में पेशकार, तीन कायदे, दो रेला, तिहाई सहित, पांच साधारण टुकड़े, चक्करदार टुकड़े, तीन सादा परन, तीन चक्करदार परन बजाने का अभ्यास।

९) उपर्युक्त तालों में मुखड़ा, मोहरा का ज्ञान

(१०) परवावज हेतू:- तीवरा, सूलताल, चारताल, धमार, दीपचन्दी, रूपक में पांच सादा परन, पांच चक्करदार परन, पांच तिहाई सादा, पांच चक्करदार तिहाईयों का ज्ञान साथ ही इनमे रेले का ज्ञान।

(११) किसी भी गायक/ वादक और नर्तक के साथ संगत करने के लिए तबला वादक को जिन वातों का ध्यान रखना चाहिए उनका विस्तृत ज्ञान ।

टिप्पणी-- पूर्व वर्षो का पाठक्रम सयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner